RNI No.- UPHIN/2017/74660
UGC Care List No. 222

ISSN: 2581-6985

प्रवासी जगत

प्रवासी जगत का साहित्य, साहित्यकार व संस्कृति केंद्रित पत्रिका

खंड-3, अंक-4; आषाढ़-भाद्रपद 2077 / जुलाई-सितंबर, 2020

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

12.	हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्यकारों की पहचान	**रामचरण मीना**	148–153
13.	जापान में हिंदी भाषा शिक्षण : कुछ प्रयोग	**डॉ. ऋचा मिश्र**	154–159
14.	प्रवासी हिंदी साहित्य और प्रो. हरिशंकर आदेश	**डॉ. वंदना श्रीवास्तव**	160–170
15.	प्रवासी हिंदी साहित्य: संस्कृतियों का संवाहक	**डॉ. आशा कुमारी**	171–178
16.	व्यंग्य की दहलीज पर रामदेव धुरंधर का व्यंग्य-लेखन	**डॉ. रमेश तिवारी**	179–185
17.	सुधा ओम ढींगरा की कहानियों में बहुरंगी प्रवासी जीवन का सच	**रामलखन कुमार**	186–191
18.	तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में स्त्री-पुरुष संबंध	**रीता रानी**	192–204

- लेखकों के नाम और पते
- सदस्यता फार्म

❑❑

जापान में हिंदी भाषा शिक्षण : कुछ प्रयोग

डॉ. ऋचा मिश्र

विश्व आज एक निजी कुटुंब सा हो गया है, इसमें कोई संशय नहीं है। संचार माध्यमों में क्रांति और वैश्वीकरण के इस दौर में भाषा जनसंपर्क का एक सबल माध्यम बनकर उभरी है। भारत की भारतीय हिंदी किसी मायने में विश्व की अन्य भाषाओं से कमतर नहीं है। विश्व का यदि हर छठा नागरिक भारतीय है, तो निश्चित रूप से हिंदी भारत की भौगोलिक सीमाओं को लांघ कर अंतरराष्ट्रीय फलक पर अपनी उपस्थिति वर्षों पहले दर्ज करा चुकी है। इसके प्रचार-प्रसार व उन्नयन के लिए महती प्रयास व्यक्तिगत व सरकारी, दोनों स्तरों पर किए गए। विभिन्न देशों में हिंदी शिक्षण केंद्र खोले गए तथा विश्वविद्यालयों में हिंदी विभागों को स्थान मिला।

विदेश में हिंदी भाषा शिक्षण का एक ऐसा ही प्रमुख केंद्र है—जापान, जहाँ हिंदी भाषा शिक्षण के दो प्रमुख क्षेत्र हैं, पहला तोक्यो तथा दूसरा ओसाका। तोक्यो के आस पास अनेक संस्थानों में हिंदी पढ़ाई जाती है जैसे एशिया विश्वविद्यालय, तोकाइ विश्वविद्यालय, तकुशोक तथा दाइतो बुका विश्वविद्यालय। इसके अतिरिक्त तोक्यो विश्वविद्यालय में भारतीय दर्शन पढ़ाया जाता है तथा यहाँ के छात्र संस्कृत भी पढ़ते हैं। इस प्रकार तोक्यो व उसके आस पास हिंदी, संस्कृत तथा भारतीय दर्शन की शिक्षा के पर्याप्त संस्थान हैं। इन सब संस्थानों में तोक्यो का विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय, विशिष्ट है। यह हिंदी अध्यापन के 100 से भी अधिक वर्ष पूरे कर चुका है। सन 1908 से लेकर अद्यतन यह विश्वविद्यालय हिंदी के संवर्धन तथा शिक्षा की मौलिक और वैज्ञानिक प्रविधि का अग्रणी केंद्र बना हुआ है। कोई आश्चर्य नहीं कि विश्वविद्यालय के योगदान की इस विशाल यशस्वी परंपरा का मूल्यांकन करते हुए सन् 2018 के अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन में इसे संस्थागत एवं व्यक्तिगत, दोनों ही श्रेणियों में विश्व हिंदी सम्मान से अलंकृत किया गया। यह संयोग ही था कि इस दौरान विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में मैं हिंदी विभाग में सन् 2017 से जापानी विद्यार्थियों को हिंदी पढ़ा रही थी। जापानी विद्यार्थी जागरूक, उत्सुक और यायावर प्रवृत्ति के होते हैं। भारतीय संस्कृति, इतिहास, भोजन, वेशभूषा और फिल्मों के प्रति इनका आकर्षण इन्हें हिंदी भाषा